Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 12, Issue September 2021 | Impact Factor 4.765

मन्नू भंडारी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक महिलाओं के संघर्ष के संदर्भ में

टी. स्वप्ना
सहायक अध्यक्ष (हिन्दी विभाग), भारती महिला कॉलेज, ब्रोडवे, चेन्नई (तमिलनाडु)

शोधसार

मन्नू भंडारी स्वातंत्र्योत्तर काल की अभूतपूर्व लेखिका है। उन्होंने अपनी लेखनी में समाज में निहित सूक्ष्म से सूक्ष्म समस्याओं को उजागर कर कुंठित नारी का चित्रण किया है। परिवर्तन समाज को सदैव एक नए धरातल पर पहुंचाता रहता है। आज नर हो या नारी दोनों मुख्य परक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आज के समाज में मन के भीतर एक द्वंद चल रहा है। बाह्य मुखाकृति कुछ और ही बयान करती है। नर और नारी जब एक संबंध से जुड़ जाते हैं जिसका नाम विवाह है। यह संबंध नारी के लिए प्रेम परक न होकर परि परक है। नारी अपनी पीड़ा में डूबती नजर आती है। सब कुछ हंसते हुए सहना उसके जीवन का एक अभिन्न अंग है। मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिक नारी का चित्रण किया गया है। आज वह खुलकर आवाज उठाती है। पति मन का मीत न हो तो संबंध विच्छेद भी कर लेती है। गृह में होने वाले प्रत्येक अत्याचारों को अब वह सहना भूल गई है। अपने जीवन को अपने तरीके से जीना चाहती है। उसने गुलामी करना छोड़ दिया है। घर और बाहर दोनो ओर अपनी आवाज को बुलंद करती नजर आती है। यही मन्नू भंडारी के कथानक की विशेषता है।

मुख्य शब्दः- दांपत्य-जीवन, नारी विवशता, विवाहित महिला संघर्ष।

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही पति देवो भवः अर्थात पति परमेश्वर है। पति को ईश्वर का स्थान दिया गया है। बदलते परिवेश ने पति को परमेश्वर का दर्जा तो नहीं लेकिन श्रद्धा का पात्र बना दिया गया है। आंख मूंदकर पति की बात मान लेना संभव नहीं रह गया है।

परिवर्तन ने संबंधों में अनेक उतार चढ़ाव किए हैं। आज भी नारी पति की खुशी में अपनी खुशी ढूढ़ रही है। मन्नू भंडारी अपनी कहानियों में यथार्थपरक चित्रण को प्रस्तुत करने में सफल रही हैं। नारी मनभावन पति तो चुनती है परन्तु चुनाव सही है या गलत यह तो समय बताता है। आपसी संबंध की मिठास तभी संभव है जब नर और नारी अर्थात पति पत्नी एक दूसरे के प्रति प्रेम-त्याग परक जीवन को अपनाए। मन्नू भंडारी ने दाम्पत्य जीवन को अत्यंत बारीकी और सूक्ष्म रूप से प्रस्तुत किया है। कोई भी पक्ष अछूता नहीं रहा है। नारी परंपरा का विरोध कर नई शैली से जीवन व्यतीत करती है। जिसका चित्रण मन्नू भण्डारी की कहानियों में आसानी से देखा जा सकता है।

भूमिका

समाज नर और नारी के बिना अछूता है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। विवाह एक ऐसी व्यवस्था है जो मनुष्य को अनुशासित रखने में मदद करता है। अनुशासित व्यक्ति ही जीवन के चरमसुख की ओर ले जाने के लिए विवाह को होना अत्यंत आवश्यक है। विवाह की आड़ में एक दूसरे का शोषण करना अत्यंत घृणित कार्य है। मन्नू भंडारी की कहानियों में इसी प्रकार के शोषण का यथार्थ चित्रण किया गया है। मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए एक दूसरे का अटूट विश्वास, अटूट प्रेम, सामंजस्यता, तन मन से एक दूसरे को समर्पण की भावना का होना नितांत आवश्यक है। विवाह जिंदगी का बोझ बन जाए, तनावों में जीवन व्यतीत करना पड़े, जीवन नष्ट हो जाता है। इन्हीं तनाव परक समस्याओं को मन्नू भंडारी जी ने अपनी लेखनी के जरिए चित्रित किया है।

मन्नू भंडारी की कहानियों में यथार्थ चित्रण

मन्नू भण्डारी द्वारा रचित "कमरे कमरा और कमरे" कहानी की नायिका नीलिमा है। नीलिमा अत्यंत ही होनहार, परिश्रमी, तेजस्वी स्त्री है। नीलिमा एक प्राध्यापिका भी है। वह अपना प्रत्येक कार्य तन मन लगाकर करती थी। किसी को शिकायत का मौका ही नहीं देती है। पति को उसकी नौकरी चुभती थी। पत्नी की नौकरी उसके सम्मान पर ठेस पहुंचाना जैसा है। नीलिमा की नौकरी से उसके आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाता है। वह बड़ी ही चालाकी से नीलिमा की नौकरी छुड़वा देता है। नीलिमा की प्रतिभा को अपने व्यवसाय में प्रयोग करता है। वह एक पक्का व्यापारी हैं। अपनी पत्नी

की इच्छा के विरुद्ध वह उसे अपने व्यवसाय का सारा भार उसे सौंप देता है। नीलिमा नासमझ अपने पति के षड्यंत्र को समझ नहीं पाती है। वह अपने पति की बातों में आकर नौकरी छोड़ देती है और अपने पति के व्यवसाय का सारा कार्य भार संभालने लगती है। अपना जीवन पति को खुशी खुशी अर्पण कर देती है। पति नीलिमा के मन के द्वन्द को समझ उसकी तारीफ के पुल बांधते हुए कहता है- "नीलू तुम्हारे बाबूजी ठीक ही कहते थे। जब से तुम आई हो मैं धूल भी हाथ में लेता हूं तो सोना हो जाती है।" इस प्रकार नीलिमा अपने सपने का गला घोंट अपने पति के सपनों को पूरा करने में तत्पर हो जाती है।

हमारे देश में 40% लोग ऐसे हैं, जो किसी न किसी प्रकार के नशे में लिप्त होकर अपने परिवार की हानि करते हैं। निम्न मध्यम वर्गीय परिवार में शराब एक ऐसा जहर है जो परिवार को नरक बना देता है। मन्नू भण्डारी की कहानी 'नशा' इसी का ज्वलंत उदाहरण है। नशा कहानी की नायिका आनंदी है। वह अपने पति से असीम प्रेम करती है। शराबी पति सदैव मारता है, पीटता है। केवल उसे ही नहीं, उसके बेटे को भी रोज की मारपीट दिनचर्या बन जाता है। शराब एक ऐसा नशा है जो इनको क्रूर बना देता है।

नशे में लिप्त होने के कारण वह सदैव अमानवीय व्यव्हार करता है। बेटा भी शादी कर अपनी को लेकर चला जाता है। विवाह के 12 वर्ष बाद पुत्र आता है अपनी अपनी मां को देखने। आज मां इस जीवन से ऊब गई, अब वह आजाद होना चाहती है। बुढापा अब बर्दाश्त नहीं करने देता। विवश होकर अपने पुत्र से कहती है- मुझे यहां से ले चल, किशनू, यहां से ले चल। मैं एक दिन भी इस घर में रहना नहीं चाहती। मैंने बहुत सहा है, अब नहीं सहा जाता, मुझे यहां से ले चल आज ही। पुत्र के साथ चली तो जाती है पर मन प्रेम पति के पास दूर रहकर भी महसूस करती है। अपने बेटा बहू से छिपकर बीस हजार रुपये पति को मनीआर्डर करती है।

'नई नौकरी' कहानी में कुंदन से विवाह कर अपने सपनों का गला घोंट देती है। रमा इतिहास विषय की प्रध्यापिका है। कुंदन नौकरी पेशा। कुंदन को रमा को नौकरी भेजना रास नहीं आती है। वह उसे घरेलू कामकाज में इतना उलझा देता है कि उसे पढाने के लिए पढने का समय ही नहीं रहता। अंत में वह नौकरी से इस्तीफा दे देती है। कुंदन अति प्रसन्न हो जाता है। कुंदन को पढी लिखी और घरेलू स्त्री चाहिए थी जो उसके बॉस

को अच्छा से अच्छा खाना खिला उसे प्रोमोशन मिलता रहा। आखिर में वही हुआ जो वह चाहता था। कुंदन से यह नहीं हुआ कि वह भी उसके काम में हाथ बढ़ाता बल्कि उलटे उसे घरेलू काम काज में व्यस्त कर रमा की पराजय में अपनी जीत हासिल करता है। रमा के इस्तीफे से खुश होकर वह कहता है "छोड़ो भी यार, वैसे भी क्या रखा है, एषियंट हिस्ट्री पढने में। चोलवंश, वेदीवंश के बारे में न भी जानेंगे तो कौनसी जिंदगी समाप्त हो जाएगी। मेरा संतोष तुम्हारा संतोष नहीं है। मेरी तरक्की, तुम्हारी तरक्की नहीं है? इस प्रकार की भावना व सोच नारी की प्रगति में बाधक है।

दरार भरने की दरार कहानी की नायिका श्रुति अत्यंत ही होनहार है। श्रुति एक प्रसिद्ध चित्रकार है। उसका पति विभू भी एक ऊँचे ओहदे पर पहुंचा हुआ व्यक्ति है। दोनों अत्यंत ही प्रति भावना ही आर्थिक तंगी का सवाल ही नहीं उठता। यह एक सुखी सम्पन्न परिवार है। यहाँ पर हम किसी से कम नहीं वाली हालत है। दोनों के अहम का टकराव इतना बढ़ जाता है कि वह विभू को छोड़ देना चाहती है। अंत में वह अलग रहने का निर्णय लेती है। बहुत दिनों के संघर्ष और द्वंद्य के बाद आखिर मैंने अंतिम रूप से निर्णय ले ही लिया है कि मैं अब अलग ही रहूंगी और सच कहती हूँ निर्णय लेने के बाद से ही जैसे मैं हलकी हो गई हूँ। एक तनाव से मुक्त हो गई हूं।

श्रुति के इस निर्णय से वह अचम्भित नहीं होता है। वह उसे समाज और प्रेम का वास्ता दे उसे बहला फुसलाकर अपनी ओर खींच लेता है। यहाँ पर विभू एक समझदार पति दृष्टव्य होता है। जो अपनी टूटी नैया को जोड़ने में सफल हो जाता है। अंततः श्रुति भी लोक लाज की भावना से लिप्त हो अपना निर्णय वापस ले लेती है। नकली हीरे कहानी की नायिका सरल है। इंदु उसकी बहन है। इंदु का दाम्पत्य जीवन सुखी है। परन्तु सरल सम्पन्नशील परिवार में विवाह होने के बावजूद भी अधूरी है। उसका पति अय्याशी किस्म का है। जब उसे उसके पति की अय्याशी का पता चलता है तब वह इस कड़वे सच को एक घूंट की तरह पी जाती है। अपनी बहन तक को नहीं कहती है। वह पति के प्रेम के अभाव में अपना जीवन व्यतीत करती है। इन हीरों में तो चमक ही नहीं, ये तो नकली है। कल जोहरी उसके साथ धोखा कर गया। इतना विश्वास का जोहरी और धोखा। वह घर में कैद हो कुंठित जीवन जीने पर विवश हो जाती है।

PURVA MIMAANSA

कील और कसक कहानी की नायिका रानी है। दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करने के पश्चात एक दूसरे की काम की भावना को समझना भी अत्यंत जरूरी है। जीवन का संघर्ष एक ओर है काम की पूर्ति एक ओर।

रानी का पति कैलाश कर्ज से मुक्ति पाने के लिए दिन-रात प्रेस में मेहनत करता है। वह रानी की कामेच्छा को समझ नहीं पाता है, रानी कैलाश से दुखी हो अपनी इच्छा का दमन करती है। शेखर पेइंगगेस्ट बन उसके घर में रहने आता ही वह शेखर से अपनी कामेच्छा को पूर्ति करती है। शेखर का विवाह हो वह चला जाता है। रानी के अस्तित्व को भूलकर सो गया। रानी को लगा वह अपने पास सोए उस आदमी का मुंह नोच ले, अपने बाल नोच ले, फूट-फूटकर रो पड़े और आंसुओं से सारे घर को और नीचे ही निरंतर धड़-धड़ करने वाले इस प्रेस को डुबो दे।

रानी शेखर कैलाश की बेरुखी उसे कुसग्रस्त बना देती। उसका स्वभाव गुस्सैल, चिंतित हो जाता है। वह अपना जीवन ऐसे ही कुंठाग्रस्त हो व्यतीत करती है। शायद कहानी की नायिका माला है। अर्थाभाव ने उसके जीवन को ग्रसित कर दिया है। पति भी अर्थ की पूर्ति के लिए अपने परिवार से दूर जाता है। दो तीन साल बाद जब लौट कर अपनाता है तब पत्नी की अपेक्षा उसे और पवित्र कर देती है। माला आर्थिक तंगी से टूट जाती है। वह घर का सारा भार संभाल थक चुकी होती है अपनी व्यथा पति को कहती है-

मुझे तो दो साल काटना ही इतना भारी पड़ता था, इस बार तुमने पूरे तीन साल लगा दिए। पूजा पर कितनी-कितनी राह देखी बेचारे बच्चों को एक नया कपड़ा तक नहीं दिलवा सकी। दादा की बिजली की दुकान खूब अच्छी चलने लगी है, सो यहां लाइट तो जरूर लगवा दी, पर इतना नहीं हुआ कि बहन के बच्चों को एक-एक कपड़ा ही दिलवा देते। टुकुर-टुकुर मेरे बच्चे दूसरों के घरों में ताकते रहे। नारी सब कुछ सह सकती है परन्तु बच्चों का कष्ट उसे अत्यंत कुरेद देता है। अर्थाभाव भी प्रेम के उत्तम को नष्ट कर देता है।

निष्कर्ष

मन्नू भण्डारी ने अपनी कहानियों में स्पष्ट किया है कि परिवार में पति-पत्नी अपनी स्वार्थ व आकांक्षाओं चाह की पूर्ति के लिए साथ देता है। आज की शिक्षित नारी

भी अपने व्यक्तित्व व अस्तित्व को बरकरार कर झूठी प्रतिष्ठा के भ्रम को पोषते हुए पति की सोच को समझ न पाकर अपने आप कुंठित हो जाती है। लेखिका कहानियों के जरिए पुरुष की स्वार्थी प्रवृत्ति और भारतीय संस्कारों में जीने वाली नारियों की कमजोरी को संकेत किया है। कहानियों में आधुनिक परिवार की नारी की मुक्तियात्रा को संकेत करती है। जहां नारियों को मजबूरन वश पुरुष प्रधान व्यवस्था के प्रति समर्पित हो जाना पड़ता है। नारी अपनी परिवार की जिंदगी से बिछड़कर अलग जिंदगी जीना भी कठिन हो जाता है।

संदर्भ सूची

मन्नू भंडारी कमरे कमरा और कमरें (मेरी कहानियां) पृष्ठः 299

मन्नू भंडारी, नशा (मेरी कहानियां) पृष्ठः 196

मन्नू भंडारी, नई नौकरी (मन्नू भंडारी की श्रेष्ठ कहानियां) 2004 पृष्ठः-363

मन्नू भंडारी, दरार भरने की दरार (मेरी कहानियाँ), पृष्ठ 369

मन्नू भंडारी नकरी हीरे (मेरी कहानियां) पृष्ठः160

मन्नू भंडारी कील और कसक (मेरी कहानियां) पृष्ठः 95

मन्नू भंडारी शायद (मेरी कहानियां) पृष्ठ-423

PURVA MIMAANSA